Volume: 5 Issue: 7 Pages: 36-38

छायावाद के आधार स्तंभ कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

[*1] मंजु जसैल और [2] डॉ. धनेश कुमार मीणा

[*1] शोधार्थी, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय, चड़ैला झुन्झुनू, राजस्थान, भारत।

[2] शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय, चुड़ैला झुन्झुनू, राजस्थान, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 05/June/2026
Accepted: 11/July/2026

***Corresponding Author**
मंजु जसैल
शोधार्थी, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय, चड़ैला झुन्झुनू, राजस्थान, भारत।

Abstract
छायावादी काव्यधारा के महाप्राण कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के समग्र काव्य, उनकी युगीन चेतना और साहित्यिक अवदान का एक विस्तृत विश्लेषणात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। निराला का साहित्य केवल छायावादी कल्पनाविलास का प्रतिरूप नहीं है, बल्कि वह घोर सामाजिक यथार्थ, राष्ट्रीय अस्मिता, अद्वैत वेदांत और शोषित वर्ग के गहन सरोकारों से निर्मित हुआ है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने ऐतिहासिक ग्रंथ 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में निराला की तत्समप्रधान शैली और कुछ आरंभिक कविताओं की क्लिष्टता की आलोचना की, परंतु वे निराला की बहुवस्तुस्पर्शिनी प्रतिभा के कायल थे। शुक्ल जी ने स्वीकार किया कि निराला में संगीतात्मकता का अनूठा प्रवाह है और उनकी कल्पना अत्यंत प्रखर है। इस शोध के अंतर्गत निराला के काव्य में अंतर्निहित दार्शनिकता, वैयक्तिक दुख और सामाजिक चेतना के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया गया है। साथ ही, हिंदी कविता को मुक्त छंद प्रदान करने में उनकी क्रांतिकारी भूमिका और भाषा-शिल्प के नव-प्रयोगों का आलोचनात्मक विवेचन किया गया है।

Keywords: छायावाद, महाप्राण निराला, विद्रोही चेतना, मुक्त छंद, अद्वैत वेदांत, सामाजिक यथार्थ, प्रगतिशीलता।

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता और कठोर नैतिकता के विरोध में जिस काव्य आंदोलन का जन्म हुआ, उसे 'छायावाद' (1918-1936) के नाम से जाना जाता है। यह युग केवल साहित्यिक परिवर्तन का नहीं, बल्कि औपनिवेशिक परतंत्रता के विरुद्ध देश के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और वैयक्तिक स्वतंत्रता का काल था। इस युग को जिन चार प्रमुख स्तंभों ने अपनी रचनात्मकता से थाम रखा था, उनमें सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का व्यक्तित्व और कृतित्व सबसे अधिक विस्मयकारी, विराट और बहुआयामी है। निराला का जीवन व्यक्तिगत त्रासदियों, आर्थिक अभावों और सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध एक अविरल महासंग्राम था। बचपन में माता का साया उठना, युवावस्था में जीवनसंगिनी मनोहरा देवी का बिछोह और अंततः युवा पुत्री सरोज की असामयिक मृत्यु ने उनके भीतर के मनुष्य को भीतर तक झकझोर दिया था। परंतु, इस असीम व्यक्तिगत पीड़ा ने उनके भीतर के कवि को तोड़ा नहीं, बल्कि उसे एक वज्र जैसी कठोरता और अगाध करुणा से भर दिया। जहाँ एक ओर छायावाद में अंतर्मुखी अनुभूतियों, सौंदर्यपरकता और प्रकृति के सुकुमार चित्रण की प्रधानता थी, वहीं निराला ने हिंदी कविता में पौरुष, ओज, विद्रोह और अदम्य जिजीविषा का समावेश किया। वे जितने उन्मुक्त अपनी वैयक्तिक अनुभूतियों में थे, उतने ही सजग अपने युगीन यथार्थ के प्रति भी थे। डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी युगांतरकारी तीन खंडों की वृहद् जीवनी और आलोचनात्मक ग्रंथ 'निराला की साहित्य साधना' में निराला को हिंदी का सबसे बड़ा जनवादी, प्रगतिशील और राष्ट्रीय कवि सिद्ध किया है। डॉ. शर्मा के अनुसार- निराला के काव्य में भारत की श्रमजीवी जनता की धड़कनें स्पष्ट सुनी जा सकती हैं। उन्होंने निराला के छंद-मुक्ति के प्रयास को केवल कलात्मक प्रयोग न मानकर सामाजिक मुक्ति का प्रतीक माना है।

मूल विषय और विश्लेषण

छायावादी सौंदर्यबोध, प्रकृति और रहस्यवाद

निराला की आरंभिक काव्य-चेतना शुद्ध छायावादी सरोकारों से निर्मित हुई है। उनकी सुप्रसिद्ध कविता 'जूही की कली' (1916) प्रकृति के मानवीयकरण का एक अप्रतिम उदाहरण है। इसमें पवन को नायक और जूही की कली को नायिका के रूप में चित्रित कर जिस मांसल परंतु अत्यंत कलात्मक श्रृंगार की सृष्टि की गई है, वह हिंदी कविता में अभूतपूर्व थी:

"विजन-वन-वल्लरी पर सोती थी सुहाग-भरी- / स्नेह-स्वप्न-मग्न - अमल-कोमल-तनु तरुणी-जुही की कली, / दृग बंद किये, शिथिल-पत्रांक में..."

निराला के काव्य में रहस्यवाद और अध्यात्म का गहरा पुट है। इस पर बंगाल के रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद के विचारों का गहरा प्रभाव था। आचार्य नंददुलारे वाजपेयी ने 'कवि निराला' में उनके छायावादी और सौंदर्यशास्त्रीय स्वरूप का विश्लेषण करते हुए उन्हें एक ऐसा रचनाकार माना जो भाव और भाषा दोनों स्तरों पर असीम का अन्वेषी है। 'तुम और मैं' जैसी दार्शनिक कविता में वे अद्वैत वेदांत की व्याख्या करते हुए आत्मा और परमात्मा के अटूट संबंध को बिंबों के माध्यम से स्पष्ट करते हैं:

"तुम तुंग-हिमालय-श्रृंग, मैं चंचल-गति-सुरसरिता... / तुम सच्चिदानंद-रूप-धrestrict, मैं केवल चेतना-अंश..."

विद्रोही चेतना और छंद-मुक्ति का आंदोलन

निराला मूलतः एक विद्रोही स्वभाव के रचनाकार थे। उन्होंने तत्कालीन साहित्यिक रूढ़ियों और 'सरस्वती' पत्रिका के कड़े अनुशासन के खिलाफ जाकर छंदों के बंधन को अस्वीकार कर दिया। उनका मानना था कि मनुष्यों की मुक्ति की तरह ही कविता की भी मुक्ति होनी चाहिए। छंदों का बंधन कविता की स्वाभाविक अभिव्यक्ति को रोकता है। उन्होंने 'मुक्त छंद' (Free Verse) या 'रबर छंद' की नींव रखी, जिसका प्रारंभ में घोर उपहास उड़ाया गया, परंतु बाद में यही आधुनिक हिंदी कविता का मुख्य माध्यम बना। डॉ. नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक 'छायावाद' और 'कविता के नए प्रतिमान' में निराला के विद्रोही स्वर का सूक्ष्म कलात्मक विश्लेषण किया है। नामवर सिंह का मानना है कि निराला ने केवल विचारधारा के स्तर पर विद्रोह नहीं किया, बल्कि उन्होंने काव्य के आंतरिक रूपों, बिंबों और प्रतीकों को तोड़कर हिंदी कविता का आधुनिकीकरण किया।

परिमल की भूमिका में वे लिखते हैं— "मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना है।"

सामाजिक यथार्थ, वर्ग-चेतना और प्रगतिशीलता

निराला का छायावाद आकाश की ऊंचाइयों से उतरकर धरती की धूल तक आता है। जब वे समाज की विषमता को देखते हैं, तो उनका स्वर अत्यंत तीखा और प्रगतिशील हो जाता है। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में इलाहाबाद के पथ पर जेठ की दुपहरी में पत्थर तोड़ती श्रमिक महिला का जो जीवंत चित्र उन्होंने खींचा है, वह मार्क्सवादी चेतना से परिपूर्ण है:

"वह तोड़ती पत्थर; / देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर- / वह तोड़ती पत्थर। / कोई न छायादार / पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार..."

इसी तरह 'भिक्षुक' कविता में वे समाज की संवेदनहीनता पर करारा प्रहार करते हैं:

"वह आता- / दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता। / पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक, / चल रहा लकुटिया टेक..."

उनकी प्रसिद्ध व्यंग्य कविता 'कुकुरमुत्ता' सर्वहारा वर्ग का प्रतीक है, जो पूँजीपति वर्ग के प्रतीक 'गुलाब' को उसकी औकात याद दिलाता है। यह कविता हिंदी साहित्य में आधुनिक जनवादी चेतना का शिखर है:

"अबे, सुन बे गुलाब, / भूल मत जो पाई खुशबू, रंग-ओ-आब, / खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट, / डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट!"

महाकाव्यात्मक उदात्तता और राष्ट्रीय चेतना:- 'राम की शक्ति पूजा' सन् 1936 में रचित 'राम की शक्ति पूजा' निराला की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदी साहित्य की कालजयी और सर्वश्रेष्ठ लंबी कविता है। यह कविता कृतिवास रामायण पर आधारित है, परंतु इसके भीतर की आत्मा पूरी तरह मौलिक है। यहाँ राम भगवान नहीं हैं, बल्कि 'संशयशील मानव' हैं। राम का रावण से युद्ध और सीता की मुक्ति का प्रयास, वास्तव में पराधीन भारत के बुद्धिजीवियों का ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्ष है। जब राम देखते हैं कि 'अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति', तो वे निराश हो जाते हैं। निराला राम के माध्यम से संदेश देते हैं कि मौलिक शक्ति की कल्पना के बिना अन्याय पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती:

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय, / रह-रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय..."

और अंततः:

"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन! / कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"

वैयक्तिक शोक का महाकाव्य

'सरोज स्मृति'अपनी अठारह वर्षीय पुत्री सरोज की मृत्यु के शोक में लिखा गया गीत 'सरोज स्मृति' हिंदी का पहला और आज तक का सबसे मार्मिक 'शोक-गीत' है। इसमें निराला का एक पिता के रूप में पश्चाताप, अपनी निर्धनता के कारण पुत्री को सुख न दे पाने की लाचारी और तत्कालीन समाज के प्रति गहरा क्षोभ व्यक्त हुआ है। यह वैयक्तिक विलाप न रहकर कलात्मक उदात्तता को प्राप्त कर लेता है:

"दुख ही जीवन की कथा रही, / क्या कहूँ आज, जो नहीं कही! / पार कर गया मैं वह सागर, / लेकर अपनी यह सूनी गर..."

भाषाई वैविध्य और शिल्पगत प्रयोग

निराला की भाषा का कैनवास अत्यंत व्यापक है। उनके पास दो अतिवादी भाषाई छोर हैं। एक तरफ 'राम की शक्ति पूजा' की संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और नाद-सौंदर्य से युक्त तत्सम शब्दावली है, जहाँ भाषा सिंह की तरह दहाड़ती है:

"रवि हुआ अस्त; ज्योति के पत्र पर लिखा अमर, / रह गया राम-रावण का अपराजेय समर..."

तो दूसरी तरफ 'कुकुरमुत्ता', 'नये पत्ते' और 'बेला' जैसी रचनाओं में वे बोलचाल की लोकभाषा, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का बेबाक प्रयोग करते हैं। निराला का संगीत ज्ञान उच्च कोटि का था, इसलिए उनकी मुक्त छंद की कविताओं में भी एक अंतर्निहित लय और आंतरिक संगीत सदैव विद्यमान रहता है।

उपसंहार

उपरोक्त विस्तृत विश्लेषण के आलोक में यह अकादमिक निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के चार स्तंभों में सबसे अधिक गतिशील, क्रांतिकारी और प्रयोगधर्मी स्तंभ हैं। वे किसी एक वाद या विचारधारा की संकीर्ण सीमाओं में कभी आबद्ध नहीं रहे। यदि प्रसाद में ऐतिहासिक भव्यता है, पंत में प्रकृति का सुकुमार सौंदर्य है, और महादेवी में विरह की अलौकिक तन्मयता है; तो निराला में इन सबका सम्मिश्रण होने के साथ-साथ

एक विराट पौरुष और युगीन यथार्थ की ठोस भूमि भी है। निराला ने हिंदी कविता को केवल छंदों की दासता से ही मुक्त नहीं कराया, बल्कि उसे भाव, भाषा और शिल्प के धरातल पर पूर्णतः लोकतांत्रिक बनाया। उनका संपूर्ण जीवन और काव्य अन्याय के विरुद्ध, चाहे वह सामाजिक हो, राजनीतिक हो या साहित्यिक, एक सतत प्रतिरोध का दस्तावेज़ है। इसीलिए वे हिंदी साहित्य के 'महाप्राण' हैं और उनका साहित्य आज के संक्रमणकालीन दौर में भी शोषितों की आवाज और मानवीय गरिमा की रक्षा का सबसे प्रखर माध्यम बना हुआ है।

संदर्भ सूची:

1. शर्मा, रामविलास. (1969). निराला की साहित्य साधना (खंड 1, 2 और 3). राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
2. शुक्ल, रामचंद्र. (1929). हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी.
3. सिंह, नामवर. (1955). छायावाद. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
4. वाजपेयी, नंददुलारे. (1944). कवि निराला. भारती भंडार, इलाहाबाद.
5. त्रिपाठी, सूर्यकांत 'निराला'. (2002). निराला रचनावली (खंड 1 से 8). संपादक: नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
6. नवल, नंदकिशोर. (1995). निराला: कृतित्व का पुनर्मूल्यांकन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.
7. चतुर्वेदी, रामस्वरूप. (1986). हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.